जागृति समाचार

रिभाईवल मिनिष्ट्रिज की ओर से

P.O. Box 2718 BC TOOWOOMBA Q4350 Australia
Phone: 61-7-46130633; e-mail: rma@revivalministries.org.au
Website: www.revivalministries.org.au

******* अक्टूबर 2006 **** अक्टूबर 2006 **** अक्टूबर 2006 *******

राष्ट्रों के सारे भाईयों,

प्रभु यीशु मसीह के नाम में सलाम जो धन्य है और एक ही राजकुमार, राजाओं का राजा, जो अभिनाशी है, जो अद्‌भुत ज्योति में विराजमान है, जिसको किसी मनुष्य ने कभी नही देखा और नदेख सकता हैं, उनको ही आदर और सम्मान मिलती रहे । आमीन ।।

हम आप को प्रोत्साहित करते है कि आप यीशु मसीह के कलीसिया के प्रेरितीय पुनःस्थापना और पुनःगठन में अपनी स्थान बना ले, उसके आगमन के लिए तैयार और तत्पर रहते हुए ।

शिलोह दल के सभी सदस्य नमस्कार कहते हैं ।

पावल गैलिगैन

आत्मिक युद्ध का परिचय

अधिकार में चलना मसीह ने सिखाया

स्पष्ट रूप में आत्मिक युद्ध के है तीन प्रकार के स्तर हैं : व्यक्तिगत स्तर जो प्रत्येक विश्वासी को संबोधन करता है, विश्वासीयों का देह, स्थानिय कलीसिया एक एल्डर के देखरेख में होती है जिन्हें प्रेरित नियुक्त करते है ; और अर्न्तराष्ट्रीय अथवा सारा विश्व मंडली प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के अगुवापन में होती हैं । तथापि ये **आत्मिक युद्ध** / **विरोध** का **स्तर** / **रहस्य**, **कलीसिया** / **विश्वासीयों** में खो गया हैं । शैतान पूरी तरह से प्रत्येक को, कलीसियाओं और अर्न्तराष्ट्रीय प्रेरितीय सेवाकाईयाँ को आक्रमण कर के सब को एक ही डंडे से हाँका है । खास जानने वाली बात है कि हमारा स्थान मसीह की देह में क्या हैं? हम मसीह में कहाँ खड़े हैं एक विस्वासी की हैसियत स, एक कलीसिया या संगति के हैसियत से और विश्व-व्याप्त मंडली की हैसियत से जो ***"जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।"*** **इफिसियों** 2 :21

दूसरी ध्यान देनीवाली बात है ***"मसीह हम में हैं"*** ज्ञान में बड़ना । वचन कहती है कि मसीह ने ***"और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया ।"*** **कुलुस्सियों** 2: 15 वचन यह भी कहती है, ***"परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नष्ट करें ।"*** 1 **यूहन्ना** 3: 8 हमें अपनी स्थान मसीह में क्या है जानना आवश्यक है जिसको परमेश्वर ने ***"और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया , और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया"*** **इफिसियों** 2:6

। जब हम अचछे चेलेपन द्वारा वचन को सिखते है (जैसे यीशु ने आज्ञा की **मत्ती** 28 : 19, 20) तब हमें ज्ञात होती है कि हम जय में चल सकते है और स्वतंत्र होकर हरेक स्थिति में ।

व्यक्तिगत स्तर

इस संदेश-पत्र में हम आत्मिक युद्ध के व्यक्तिगत स्तर का परिचय दे रहे है कि संत जन सुसज्जित होकर बुरे दीनों मे खड़ा रह सके । यीशु ने नयाँ जन्म पाये हुए प्रत्येक विश्वासीयों को दुष्ट आत्मा के ऊपर अधिकार दी हैं और उन्हें निकालने की भी । **मर्कुस** 16 : 17 ***"और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे ।"*** यदि एक विश्वासी को दुष्टात्मा से समस्या है अथवा दुस्टात्मा से पिडीत व्यक्ति से रूकावट जो नज़दीक हैं तो उस विश्वासी को यीशु से अधिकार है कि यीशु के नाम मे दुष्टात्मा को निकलने के लिए आज्ञा करें । दुष्टात्मा को निकालना हरदम सहज नहीं है या एक आम काम नहीं है परन्तु इस में कोई शक नहीं की यीशु ने सारे विश्वासी को यह अधिकार दी हैं ।

याकुब 4 : 7 में शैतान के ऊपर प्रत्येक के लिए अधिकार की एक कुंजी है । ***"इसलिए परमेश्वर के अधिन हो जाओ ; और शैतान का साम्हना करो , तो तुम्हारे पास से भाग निकलेगा ।"*** हमें परमेश्वर के **वश** में हो जाना हैं, तभी हम शत्रु का विरोध कर सकते हैं जब वह हमारे विरुद्ध आता है । कई लोंग गलती कर बैठते है, परमेश्वर के अधिन हुए बिना ही शैतान को भगाने की कोशिश करते हैं । परमेश्वर के अधिन हो जाने का अर्थ है वचन में विश्वास द्वारा आज्ञा मानते हुए चलना । **शिष्यता में समर्पण होते हुए विश्वास की ओर आज्ञा मानते हुए सर्थक चल सकते हैं :** ध्यान से वचन को पढ़ते हुए , शिक्षा दिने की आत्मा पाते हुए कि हम उन विषयों में निर्देश पाए जिन के लिए परमेश्वर ने हमें अगुवा और शिक्षक नियुक्त किया हैं ।

1 **पतरस** 5: 8-9 ***"सचेत हो , और जागते रहो , क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है , कि किस को फाड़ खाए ।"*** शैतान का आक्रमण में हो जाने का मतलब है कि परीक्षा होना और उस से परीक्षा होना, यह ऐसी बात है जो सब लोंग अनुभव करते है और सतावट होती है, लेकिन परमेश्वर का वचन हम से वायदा करता कि यदि हम शैतान का साम्हना करेंगे तो वह हम से भाग निकलेगा । पतरस हम से कहता है कि शैतान विरोध करे ***विश्वास के लिए पूरा यत्न करें*** । विश्वास संबोधन करता विश्वास के सिधान्तों को (**यहूदा** 3) लेकिन यह हमारे ह्न्दय से विश्वास करने को भी संबोधन करता हैं, परमेश्वर के अधिन पूरी तरह हो जाना ही इसका सही अर्थ हैं । जैसे-जैसे हम परमेश्वर के अधिन होने के लिए सिखते हैं, विश्वास के लिए पूरा यत्न करते हुए , और कुछ समय के लिए सतावट सहते हुए, तब पतरस हम मे वायदा करता है कि ***"अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है , जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया , तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और बलवन्त करेगा"*** 1**पतरस** 5:10

जवान सवकें, पशिक्षण में

लूका 10: 17 ***"वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं ।"*** यहाँ पर हम देखते है कि प्रशिक्षण मे सुसमाचार सुनाने वाले अथवा गवाह देने वाले जिन को यीशु ने

बढ़ाया था, शैतानों के ऊपर अधिकार था । 19 **पद में** यीशु ने उन चेलों से कहा ***"देखो, मैने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानी न होगी ।"*** यीशु सत्तर गवाहों से बातें कर रहा था जिन को उसने नियुक्त किया और भेजा (**पद** 1) बाद में कुछ सामान्य पशिक्षण के बाद और खास निर्देशन के बाद उन्हें सेवाकाई में प्रयोग के लिए जाना था (**पद** 2- 12 **तक**) । यही अधिकार यीशु ने प्रशिक्षण के दौरान सेवकों को दिया था, शैतान के सारे अधिकारों को कुचलने के लिए,जब वह आप के विरुद्ध आता है । यही सामर्थ हैं जिससे हम शैतान का विरोध कर सकते हैं , शैतान पर विजय पाने के लिए , जब कभी भी सारे अधिकार उस सेवक के विरुद्ध खड़ा होता हैं । इस अधिकार से हमें शैतान को भगाना है, दुष्ट-आत्मा के वश में हुए लोगों को और दुष्ट बलवान व्यक्ति के युक्तियों से मुक्त कराते हुए । जवान व्यक्ति / प्रशिक्षणार्थी सेवकलोग ही ऐसे लोंग है जो दुष्ट के ऊपर विजय पा सकता हैं क्योंकि परमेश्वर का वचन उन में है, 1 **यूहन्ना** 2: 14 ***"कि तुम बलवन्त हो , और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई हैं ।"***

परमेश्वर का वचन जो हम में रहता है, वही शिष्यपन का उचित फल हैं।

बलवान मनुष्य को बाँधने का मतलब क्या हैं ?

मत्ती 12: 29 मे यीशु ने कहा, ***"या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले?"*** बलवान मनुष्य कौन है ? ये वचनों का अंश उस संदर्भ में है जब यीशु ने एक अन्धी और गुंगी दुष्टात्मा के जकड़े हुए मनुष्य को चंगा किया (**पद** 22) । फरीसियों ने यीशु को दोष लगाया कि वह दुष्टत्माओं के सरदार की शक्ति से दुष्टात्मा को निकालता है । यीशु फरीसियों से कहा कि घराना जिस में फूट होती है , बना न रहेगा । यीशु एक घर में दुष्टात्मा होने का जिक्र करता हैं । यह घर व्यक्तिगत जीवन है, न कि स्वर्गीय स्थानों के प्रधानताएँ। जब एक व्यक्ति दुष्टात्मा से जकड़ जाता है तो आवश्यक है कि वह उस दुष्टात्मा से मुक्त हो । यीशु साफ-साफ कहता है कि हम यह कार्य तभी कर सकते हैं जब हम पहले बलवान मनुष्य (दुष्टात्मा) को बान्धेंगे और तब मनुष्य की सहमति से ही भगा सकते हैं । बलवान मनुष्य जो कहा गया है वह मनुष्य की सीमा में शैतानिक बलवान मनुष्य है, न कि आत्मिक भेद में । यह छुटकारा व्यक्तिगत है । यीशु ने उस व्यक्ति को बहरी और गुंगी आत्मा से मुक्त किया ।

मत्ती 12: 43- 45 में यीशु कहता है कि जब एक दुष्टात्मा एक व्यक्ति से निकाली जाती है । ऐसी आत्मा सूखी जगहों में विश्राम दूढती फिरती है, यह हमें निर्णय करना नहीं है कि अशुद्ध आत्मा कहाँ जाती हैं, हमें केवल दुष्टात्मा को उस व्यक्ति से निकाल भगाना हैं । घर जहाँ से वह आत्मा निकल आई है, उस व्यक्ति को संबोधन करता है जहाँ से आत्मा निकल आई हैं । जब आत्मा एक व्यक्ति से निकल जाती है तो वह व्यक्ति को आवश्यक है कि पूरी उद्धार का जीवन बीताएँ . पानी का बप्तिस्मा लेते हुए वचन के अनुसार और पवित्र आत्मा से भर जाए , जिससे वह घर खाली न रहे ।

एक व्यक्ति जो बचाया गया है उस मे भी अशुद्ध आत्मा हो सकती है, क्योंकि वे लोंग पूरी रीति पर बुराई से नहीं फिरा हैं । कई बार एक समर्पित विश्वासी, एक सेवक भी, एक दुष्टात्मा से सताए जा सकते है - हो सकता है शैतानिक बलवान मनुष्य को उन व्यक्त्यिों के जीवन में रूकावट पहुँचाने के लिए नियुक्त किया गया हो कि उन्हें समस्याओं को लाकर उन्हें बेअसर कर दे । कई बार वह व्यक्ति समस्याओं से घेरे रहने से

सोचता हैं कि उनके ह्दय में दुष्टता हैं । उस समस्या से छुटकारा पाने के लिए उपवास और प्रर्थनाएँ करने के बावजुद असफल होते हैं । हमें तब प्रभु से पूछना है कि ज़ाँचे क्योंकि कई बार समस्याओं से घिरे रहने का वजह का कारण वह शैतानिक बलवान पूरूष हो सकता हैं । उदाहरण के रूप मे मैं संबोधन कर रहा हूँ : समान्य व्यभिचार अथवा अशुद्ध विचारें , विवेक में विवाद होना , आत्मिक अनुशासनों में कमी आना इत्यादि । हम ने ऐसे भी व्यक्ति देखें है जिन्होंने इन सब क्षेत्रों से छुटकारा पाई हैं और हम अच्छे समर्पित संतों के विषय में बातें कर रहे हैं ।

मनुष्य को मन फिराना होगा, परमेश्वर के आगे नम्र बनना होगा, पापों को मान लेना होगा, दुष्टात्मा को निकालना होगा, और मसीह की आत्मा से भरे रहना हो गा । साधरणतः हमें किसी से पूछना होगा जो अधिकार के साथ अगुवाई करता हैं और दुष्टात्मा को निकालता हैं । अधिक घटनाओं मे जब व्यक्ति को समस्या का ज्ञात होता है और मदद के लिए आगे आता है तो यह एक आसान प्रक्रिया बन जाता हैं । कई एक बार प्रभु मनुष्य को उन के समस्या का स्वभाव बताया है । दुष्टात्मा निकल जाना सर्थक बन जाता है जब सेवक (विश्वासी) उनके अधिकारों को जानते है और मसीह में खड़े रहते हैं । दुष्टात्मा को डाँटने की जरुरत नहीं है बल्कि मसीह के अधिकार मे बोलना हैं । समय-समय पर मैंने दुष्टात्मा के विरुद्ध धिरे से फुसफुसाकर बोला है दुष्टात्माओं ने मेरी बात मानी हैं ।

विवेक में युद्ध

2 **कुरिन्थियों** 10: 3–6 भी व्यक्तिगत युद्ध के विषय में ही बाते करता है । प्रथामिक रुप में हमारी विवेक में होने वाली युद्ध के विषय में बातें करता हैं । ये आयतें दुष्ट शक्तिओं को संबोधन नहीं करती हैं बल्कि कुछ ही दुष्ट बल है कार्यशील होती है लोगों को भरमाने के लिए उनमे आस्था के अनुसार । फिर भी पौलुस हम से बातें करता है और हमें सिखाता है शैतानिक संर्दभ में नही परन्तु मन में : सोच , कल्पना, तर्क- वितर्क, विश्वास और अभिवृति जो उन विश्वासों से निकलती है जिसका अन्त बारम्बार बहुत ही प्रभावशाली होती हैं, आक्रामक अभिव्यक्ति ही हर प्रकार की बुरी आदतें और परस्परिक समस्याओं का जड़ हैं ।

पद 3 **“*क्योंकि यधपि हम शरीर में चलते फिरते हैं , तौभी शरीर के अनुसार नही लड़ते*।”** स्वभाव ही से हम शरीर के सन्तान है, वही हमारी अवस्था है, परन्तु जब हम आत्मा से जन्में बच्चे बन गए है, अब हम में परमेश्वर की आत्मा कार्यरत हैं । फलस्वरूप हम शारीरिक प्रभुताएँ के अधिन न रहेंगे और ऐसी शक्तियों का प्रवेश नहीं हो सकता जब हमारी मन (विवेक) परिवर्तन हो जाता है ।

पद 4 **“*क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं , पर गढ़ो को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं* ।”** मसीह की आत्मा ने हमें हथियार दी है और शक्ति प्रदान करती है कि हम शारीरिक शक्तियों के ऊपर जय पा सकें जो हमारे स्वभाव द्वारा प्रभुत्व करती है । वह हमें आत्मिक हथियार प्रदान करता है, जो आत्मिक योग्यता है जो बुद्धि के नये हो जाने से होता है (**रोमियों** 12:2) ।

गढ़ विश्वास और विचार-ढ़ाचा का एक ऐसी जगह है हमारी जीवन में जो दृढ़ता से जन्म ही से बसा हुआ है जिस परिवेश में बडे हुए हैं । हमें ऐसी गढ़ों को ढ़ा देनी हैं हमारे सोच-विचारों में , परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति में । ये गढ़ो गहरी बातें हो सकती हैं जो हमारे जन्म से ही हममें बसा हुआ हों, जातिबाद की गढ़े

जो गोरा और काला चमड़े भिन्ता लाता हो । यह गढ़े सांस्कृतिक , राष्ट्रिय , जनजातिय , धार्मिक, पंथिय, विभिन्न विश्वास के विचारें (उदाहरण के लिए इस्लाम और इसाईमत) जिसको हम अन्धा-धुन्द मान लेते है और उनके संप्रमाणता पर प्रश्न नहीं करते हैं । हम ऐसी ही स्थिति और विश्वास में हमारा जन्म हुआ हैं । ऐसी गढों में लोगों को झेलना पड़ता है और जान भी गवानी पड़ती हैं । ऐसी गढों में विश्वासीयों को जिना पड़ता हैं । पौलुस कहता है कि ढा वाली ऐसी गढों के लिए हम परमेश्वर की सार्मथ हैं । हमें अपनी ह्दय को , हमारी सोच को दुबारा जाँचना हैं और सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारी बनना हैं ।

इब्रानियों 4: 12 , ***"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित , और प्रबल , और हरेक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है , और जीव और आत्मा को , और गांठ गांठ , और गूदे गूदे को अलग करके , वार पार छेतता है ; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है ।"*** परमेश्वर का वचन ही हमें वार-पार छेतता हैं। ऐसी करनेवाली दुनियाँ में कोई ऐसी शक्ति अथवा एजेन्ट नही है । इसलिए सब से शक्तिशाली हथियार परमेश्वर की ओर से जो हमें दिया गया है, वह है परमेश्वर का वचन , बाईबल जो परमेश्वर का ***लोगोस*** है । कोई दुसरा प्रतिस्थानी नहीं है नियमित बाईबल अध्ययन में अथवा प्रतिबद्ध चेलेपन में जहाँ शिक्षक विश्वासीयों को सिखाते वक्त कर सके । यह बहुत आवश्यक है कि विश्वासी को वचन दिल से सिखना है , इस कदर **दो धारी तलवार को** चलाना है ।

पद 5 (**क**) ***"विरोध को खंडन करते हुए "*** 'विरोध' हमारी अपनी ही विश्वास के पद्धति अथवा विषय-विचारों को दर्शाता है , उदाहतणतःअनुवंशिकता का सिधान्त । जो लोंग गलत सिधान्त से भरे हैं सब बातों में विवाद करना चहाते हैं । ये विरोध हमारी ही मन में विवेक में होता हैं और फिर हम से पौलुस कहता है इन्हें ढा देनी की शक्ति हम में हैं । वह शक्ति आत्मा-शक्ति से भरा हुआ वचन हैं , सब प्रकार की आत्मा में बिनती से समावेश है । ***"और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रर्थना , और बिनती करते रहों , और इसी लिए जागते रहों, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो ।"*** **इफिसियों** 6: 18

पद 5 (**ख**) ***"और हर एक ऊँची बात को , जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है। "*** 'हरेक ऊँची बात' हमारी अपनी ही घमण्ड और घमण्ड वाली बातों को , विचारों को , चाल चलन इत्यादि । पुराने नियम में , राजा दाऊद के राज्य के बाद , 'ऊचे स्थानों' के लगातार जिक्र किया गया हैं । जब पुनःनिर्माण के समयों में राजा लोंग सिंहसन में थे , उन्होंने मूर्तिपूजा को ऊँचे स्थानों में नष्ट तो किया लेकिन उसी ऊँचे स्थानों में यहोवा परमेश्वर की आराधना को भी जारी रखा, जब कि प्रभु का वचन ने एकदम स्पष्ट किया था कि यहोवा की आराधना उसके उपस्थिति के जगह (तम्बु और मंदिर में) पर की जाए । परमेश्वर के लोंग आज भी ऐसे ही है : प्रत्येक झुण्ड , प्रत्येक पंथ , आराधना अपनी-अपनी रीति पर करते हैं , उनके अपनी ही स्थान पर और सही शिक्षा को कम सम्मान देते हैं और नये नियम में यीशु मसीह की कलीसिया में अभ्यास करते हैं । केवल प्रेरितीय सिधान्त ही ऊँचे स्थानों को ढा देने के लिए पुनःस्थापित और दृड़ रहा है , और परमेश्वर के लोंग सत्य आराधना पिता का आत्मा और सच्चाई में करेंगे (**यूहन्ना** 4 : 23–24) ।

पद 5 (ग) ***“हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देता है”***। ‘हरेक भावना’ वे है जहाँ हम अपनी मन को लगाते हैं , मन की युक्ति जो एक बंदुक का गोला अथवा मन -यंत्र के समान है जो विशेष ढंग से प्रतिक्रिया दिखाती हैं । यह ऐसी चीज़ है जो एक व्यक्ति को एक उत्तर मिलता है और वही उत्तर उस व्यक्ति को गलत रीति से कार्य करने को उक्साकर झगड़ा और दण्ड तक पहुँचाता है । एक विचार कोई दुष्टात्मा नही कि जो उसे निकाला जाये, ये आयतें उन लोगों को संबोधन करती जो गलत रीति से सोचते और करते हैं । पौलुस कहता है कि हम हरेक के पास इन वस्तुओं को गिराने की शक्ति हैं और उन्हें मसीह के आज्ञा के अधिन ला सकते हैं । दूसरे शब्दों में, आत्मिक लोगों के नाई, हमें अपनी मनों के ऊपर राज्य करनी हैं , हमारी अन्दर की मनुष्य-आत्मा के द्वारा ज़ाँच करनी चाहिए । हमें यह जानना आवश्यक हैं कि हमारे विचार मन के क्षेत्र में हैं । मन के अधिन न रहें । 1 **कुरिन्थियों** 2 :10 हमें सिखाती है कि ***“मनुष्य की आत्मा जो उसके अन्दर है, मनुष्य के बातों को जानता हैं”*** और क्योंकि हमने परमेश्वर की आत्मा पाई है इसलिए ***“हम उन बातों को जाने जो परमेश्वर की ओर से मुफ्त मिली है”***। आत्मिक जन सब कुछ ज़ाँच सकता है, ***“परन्तु वह आप किसी को ज़ाँचा नही जाता”***।

कैसे कोई विचारों के अधिन हो जाते हैं ? जब आपका मन विचारों से भर जाता है तब नियन्त्रण के बाहार हो जाते है, केवल इस वाक्य को मानिएगा *“प्रभु मै उन सब विचारों को आपके वचन के और यीशु के नाम के अधिन मे लाता हूँ जो मेरे मन में दौड़ता रहता है।”* तब आप पाएगें कि आपका मन शान्तिमय है ।

पद 6 ***“और तैयार रहते है कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा ले”*** विषय यह है कि हमारी आज्ञाकारिता पूरी होगी और जब यह हमारे होगी तब हम दूसरों को अवज्ञाकारीता से बाहार आने में मदद करेंगे । **आज्ञाकारीता** निर्भर करता है कि हम कैसे सुनते है । यह स्ट्रांग टिप्पणी #5218 के अनुसार ह्युपाका है जिसका साहित्य शब्द होता है निचे सुनना । यह शब्द संकेत करता है सावधानी से सुनना , अधिनता से साथ , सम्मति और समझौता के साथ आज्ञाकारी होकर सुसना । नये नियम में यह आम तौर से आज्ञाकारिता के लिए प्रयोग किया गया हैं , परमेश्वर का वचन ले प्रति आज्ञापालन, और मसीह का आज्ञापालन । हमें वचन को नम्रतापूर्वक परमेश्वर का वचन ग्रहण करना चाहिए , वही वचन जो अंतिम अधिकार रखता हैं और हम उस वचन को मानने की इच्छा रखे जो हम सुनते है -वह है **कर्म में विश्वास** ।

कुंजि जो मैने इस शिक्षा में जोर दिया हैं वह है चेलापन ; जो तब तक सिखाया जाता है जब तक कि आप परमेश्वर का वचन न सिख ले, और दुष्ट के ऊपर जय न पा ले, अपनी ही विवेक के अन्दर के गढ़ो को न ढा दे , शैतान का विरोध करने की धर्य हो और उसे भागते हुए देखें , दुष्टात्मा को भगाने की योग्य हों । वचन के बड़ते ज्ञान के द्वारा आप यीशु के नाम का अधिकार को जान पाएंगे । वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है ; दूसरे नामों में श्रेष्ठ नाम हैं । आप जान पाएंगे मसीह की लहू की शक्ति जो हरेक पापों को धोता है और दुष्ट से दूर रखता है । और हमारे जीवनों मे विजय के मुख्य क्षेत्र हैं समर्पित प्रार्थना ।

पावल गैलिगन द्वारा ।

++

कलैण्डर

महत्वपूर्ण बात : पावल ने प्रेरित डॉन आट्कीन द्वारा भेजे गए ओर्लान्डो , फ्लोरिडा मे होने वाली प्रेरितिय सम्मेलन और काउन्सिल निमंत्रण को स्वीकार किया है और **रविवार** 22 **अक्टोबर** को रवाना होंगे और 3 **नवम्बर** को लौटेंगे । पावल के लिए यह एक सुन्दर मौका है और प्रेरितों से मिलने, बाँटने और ग्रहण करने के लिए । यह सम्मेलन अनेक प्रेरितों को एक साथ ले आ रहा है जो अपनी-अपनी सेवाकाईयों अथवा झुण्डों की अगुवाई कर रहे हैं । डॉक्टर टीम एर्ली भी उपस्थित होंगे - हम ने टीम से अद्‌भुत शिक्षाएँ प्राप्त की है , साथ ही भाई डॉन से भी ।

विदेशी दौराएँ,

पूर्वी और मध्य-आफ्रीका की ओर प्रस्थान रविवार 29 **अक्टूबर** : पास्टर पीटर डॉ ब्रेसेक और पावल एसेलिंक नाईरोबी, पश्चिम केनयाँ , बुजुमबुरा बुरूण्डी , रवाण्डा और उगाण्डा की कई सम्मेलनों और जनसमूहों में सिखाएंगे और बोलेंगे । शुक्रवार 8 दिसम्बर को घर लौटेंगे । सम्मेलनों की स्थानों और तिथियों को और जानकारी के लिए कृपाया सर्म्पक करें - प्रेरित मेशक म्बुगवा, नाईरोबी , केनयाँ में , फोन नम्बर +254 722656984 अथवा ईमेल (email) - apostolicschool@yahoo.com

भारत – पास्टर जिन मेनिंग 26 **अक्टोबर** को रवाना होंगे पारिवारिक जिम्मादारीयों और सेवाकाई नियुक्तियों के साथ ।

बर्मा (म्यानमाँ में 10 से 20 **नवम्बर** तक – पास्टर जिन मेनिंग , मार्गेरेट हूपर और पास्टर रोजर फ्रेसर (किल्लेनेरी) बर्मा मे सिखाएंगे और बोलेंगे पास्टरों के साथ और बाईबल कालेजों में । 30 **नवम्बर** को लौटेंगे ।